

पाठ 13 अध्याय 10 और 11

पिछले सप्ताह हमने व्यवस्थाविवरण 10 के अध्ययन के मध्य में इस आलंकारिक किन्तु प्रभावशाली प्रश्न पर चर्चा की थी, जो मूसा ने मोआब में एक पहाड़ी की चोटी पर खड़े होकर चुने हुए लोगों को संबोधित करते हुए पूछा था और अब, हे इस्राएल, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से क्या चाहता है?"

और मूसा अपने प्रश्न का उत्तर इस निर्देश के साथ देता है: परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों को यहोवा का आदर करना चाहिए, उसके मार्गों पर चलना चाहिए, उससे प्रेम करना चाहिए, उसकी सेवा करनी चाहिए, और उसके नियमों और आज्ञाओं का पालन करना चाहिए (या उनका पालन करना चाहिए)। आदर करें, चलें, प्रेम करें, सेवा करें और आज्ञापालन करें। और इसलिए मैंने आपसे अपना एक आलंकारिक प्रश्न पूछा (और मेरा विश्वास करें, यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है) क्या आप केवल अपना उद्धार प्राप्त करना चाहते हैं और फिर आप अपने बाकी के कामों में बेफिक्र होकर, ईश्वर के कामों से मुक्त होकर यह विश्वास करते हैं कि आपके पाप वैसे भी ढँके हुए हैं, तो इसके बारे में चिंता क्यों करें? अर्थात्, क्या आप वास्तव में मानते हैं कि एक बार जब आप हमारे मसीहा यीशुआ पर भरोसा करते हैं तो आपके पास उनके प्रति कोई और दायित्व नहीं रह जाता है और आपके निर्णयों और कार्यों (या निष्क्रियताओं) के लिए कोई परिणाम नहीं होंगे? क्या आपने यह निर्णय लिया है कि आप अपने ज्ञान को कि उसने आपके लिए क्या किया है, अपनी आराधना से और अपने शेष जीवन को जीने के तरीके से पूरी तरह से अलग कर सकते हैं? मुझे बिना किसी हिचकिचाहट या संदेह के कहना चाहिए यह सटीक निहितार्थ आधुनिक (विशेष रूप से आधुनिक इंगील) चर्च के भीतर व्याप्त है और यह भी सवाल उठाता है कि क्या लिखित शब्द के प्रति विश्वासियों की आज्ञाकारिता का कोई भी रूप वास्तव में विधिवाद है, और इस प्रकार एक बुरी बात है और मैं आज ऐसे अधर्मी सिद्धांत के सख्त विरोध में बोल रहा हूँ जिसका आधार गैर—यहूदी चर्च को इब्रानी तोरह से दूर करने की इच्छा से ज्यादा कुछ नहीं है और एक ईसाई के जीवन को ऐसा दिखाना है मानो हमारे उद्धार के क्षण से, हमें स्वर्ग की प्रतीक्षा करते हुए केवल अस्तित्व में रहने के अलावा और कुछ करने के कर्तव्य से निवृत्त होने का अधिकार मिल गया है। मूसा कहते हैं, 'इस्राएल के छुड़ाए हुए, तुम्हारे पास करने के लिए बहुत कुछ है'। आधुनिक ईसाई धर्म कहता है, 'मसीह के छुड़ाए हुए, अभी छोड़ो और अपनी ऊर्जा बचाओ'।

हमने पिछली बार इस पर विस्तार से चर्चा की थी इसलिए हम इसे दोहराएंगे नहीं, लेकिन आप निश्चित रहिए कि मैं तब तक चैन से नहीं बैठूंगा जब तक मैं आपको यह समझाने की पूरी कोशिश नहीं कर लेता कि प्रभु के प्रति आपके भी दायित्व हैं और उनके प्रति केवल प्रेम महसूस करना, उनके उद्धार के अतुलनीय उपहार के प्रति उचित प्रतिक्रिया के रूप में पर्याप्त नहीं होगा। कुछ संप्रदायों में यह एक मानक सिद्धांत बन गया है कि ईश्वर हमसे केवल हमारे दिलों में प्रेम की भावना चाहता है और अन्य ईसाइयों की संगति में आनंद लेने और शायद कभी-कभार पूजा सेवा में शामिल होने के अलावा कुछ भी करना, वास्तव में नकारात्मक है। मैं आपको याद दिलाता हूँ, यहाँ व्यवस्थाविवरण में ईश्वर ये सभी निर्देश उन लोगों को दे रहा है जिन्हें उसने

पहले ही छुड़ाया है। और यह ईश्वर का पैटर्न है जो स्वाभाविक रूप से हमारे युग में प्रवाहित होता है जैसा कि उसके सभी पैटर्न करते हैं। सबसे पहले हमें छुड़ाया जाता है, और उसके बाद ही वह हमें अपनी आज्ञाएँ और निर्देश देता है।

उनके आदेश और निर्देश उन लोगों के लिए नहीं हैं जो पहले से ही छुड़ाए नहीं गए हैं (ईसाई शब्दावली में बचाए गए)। फिर से उनके आदेश और निर्देश (जिसे चर्च उपहासपूर्वक “व्यवस्था” कहता है) मुक्ति के उद्देश्य से नहीं हैं। मुक्ति एक मुफ्त उपहार है, जिसे परमेश्वर जिसे देना चाहता है उसे दिया जाता है, और यह हमेशा से ही एक मुफ्त उपहार रहा है, यहाँ तक कि मूसा के समय में भी। परमेश्वर के नियम छुड़ाए गए व्यक्तियों को यह निर्देश देने के उद्देश्य से हैं कि वे छुड़ाए गए जीवन को कैसे जिएँ।

इसके अलावा, प्रभु की माँग है कि ऐसा कोई **तरीका** हो जिससे उसे प्रेम दिखाया जा सके। विवाह परामर्शदाता पति और पत्नी से पूछे जाने वाले सामान्य प्रश्नों में से एक यह है: आप कैसे चाहते हैं कि आपको प्रेम दिखाया जाए? अधिकांश पुरुष इस प्रश्न से जूझते हैं (अक्सर यह भी नहीं समझते कि इसका क्या अर्थ है), लेकिन अधिकांश महिलाओं के पास तुरंत इसका उत्तर होता है। और जिन विवाह परामर्शदाताओं से मैं परिचित हूँ, उनका कहना है कि विवाह में समस्याओं का मुख्य कारण यह है कि पति या पत्नी अपने साथी को उस तरीके से प्रेम दिखाने के लिए तैयार नहीं होते हैं जिसे साथी पहचान सके और वास्तविक प्रेम के रूप में स्वीकार कर सके।

बाइबल हमें मानव विवाह में प्रेम के इस मुद्दे के बारे में एक सामान्यीकरण देती है: यह कहती है कि महिलाओं को अपने पतियों का सम्मान करना चाहिए, और पतियों को अपनी पत्नियों से प्रेम दिखाना चाहिए। परमेश्वर का वचन बताता है कि एक पत्नी अपने पति के अधीन रहकर उसे सम्मान देती है, जो कि एक पुरुष के लिए प्रेम के बराबर है। वैकल्पिक रूप से, एक पति अपनी पत्नी को वह प्रेम दिखाता है जिसकी वह तलाश करती है, उसे खुद से ऊपर रखकर, यह प्रदर्शित करके कि यदि आवश्यकता हो तो वह उसकी रक्षा के लिए अपना जीवन त्याग देगा, और उसकी ज़रूरतों और चिंताओं के प्रति दयालु और कोमल और जागरूक होकर। फिर से, यह निश्चित रूप से एक सामान्य बात है लेकिन मुझे लगता है कि मैं ऐसे विवाहित जोड़े से नहीं मिला हूँ जो इस मूल आधार से सहमत न हों।

बेशक, व्यक्तिगत रूप से हम में से प्रत्येक के पास कुछ खास चीजें होती हैं जो हमें “प्यार” का संकेत देती हैं। महिलाओं के लिए अक्सर यह सिर्फ उनके पति का मौखिक रूप से, काफी नियमित आधार पर “आई लव यू” कहना होता है। दूसरों के लिए यह फूलों का गुलदस्ता और अप्रत्याशित उपहार जैसी कोई आश्चर्यजनक याद हो सकती है। एक पुरुष के लिए यह उसकी पत्नी द्वारा उसके लिए भोजन तैयार करना हो सकता है जिसे वह जानती है कि वह उसका पसंदीदा है; या अपने बच्चों की परवरिश और अपने घर की देखभाल अच्छी तरह से करना; या नियमित रूप से उन मामलों पर उसकी सलाह (या अनुमति) लेना जिनके बारे में वह भी नहीं मानता कि उसे ही निर्णय लेना चाहिए।

लेकिन बात यह है: वह महिला जो "मैं तुमसे प्यार करता हूँ" सुनने के लिए तरसती है, लेकिन उसका पति ऐसा नहीं कह सकता या कहना नहीं चाहता, उसे उस तरह से प्यार नहीं किया जा रहा है जिसे वह प्यार समझती है। और जबकि इसका यह मतलब बिलकुल नहीं है कि शादी विफल हो जाएगी, लेकिन रिश्ता उतना संतोषजनक नहीं होगा जितना हो सकता है या होना चाहिए। यही बात परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते पर भी लागू होती है। उसने हमें बहुत ही स्पष्ट शब्दों में बताया है कि वह कैसे चाहता है कि हमें प्यार दिखाया जाए। वह कहते हैं कि उनके लिए प्रेम, उनके नियमों और आदेशों का पालन करने से शुरू होता है। वह कहते हैं कि उनका आदर करना, उनके बताए गए तरीकों पर चलना, उनकी ईमानदारी से सेवा करना और उनकी आज्ञा का पालन करना उन्हें दिखाता है कि हम उनसे उसी तरह प्यार करते हैं जिस तरह से वह चाहते हैं कि हमसे प्यार किया जाए। क्या हम उनका आदर नहीं कर सकते, उनके बताए तरीकों पर नहीं चल सकते, उनकी सेवा नहीं कर सकते, और उनके आज्ञाकारी नहीं हो सकते और फिर भी कुछ हद तक उनसे प्यार कर सकते हैं? शायद समीकरण के हमारे पक्ष से लेकिन उनके पक्ष से नहीं। अगर हम जोर देते हैं कि हम उनसे प्यार करते हैं लेकिन वह कहते हैं कि हम नहीं करते हैं तो इसका मतलब है कि हमारा प्रभु के साथ कैसा रिश्ता है?

आइये व्यवस्थाविवरण अध्याय 10 के अंतिम कुछ पदों को पुनः पढ़ें।

व्यवस्थाविवरण 10:12 को पुनः पढ़ें अंत तक

यह समझाने के बाद कि परमेश्वर अपने छुड़ाए हुए लोगों से क्या चाहता है, पद 16 में एक अजीब कथन दिया गया है जिसे हम पुराने नियम के शेष भाग में और नए नियम में कई प्रमुख स्थानों पर नियमित अंतराल पर दोहराते हुए पाएँगे। यह है कि प्रभु खतना किए हुए हृदयों को, खतना किए हुए चमड़ी से अधिक चाहते हैं। याद रखें "हृदय" शब्द को काट दें (क्योंकि हमारी 21वीं सदी की भाषा में "हृदय" का क्या अर्थ है) और इसके बजाय "मन" शब्द डालें क्योंकि बाइबल युग के लोगों के लिए "हृदय" का यही अर्थ था। तो यह "अपनी इच्छा, विचारों और मानसिक प्रक्रियाओं का खतना करने" के लिए कह रहा है।

उदाहरण यह है कि अपने हृदय की चमड़ी का खतना करने का अर्थ है अपने मन और निर्णयों पर से सुरक्षात्मक (यहाँ तक कि अभेद्य) आवरण हटाना जो परमेश्वर को अंदर आने से रोकता है। इसका अर्थ है हठी होना बंद करना और इस प्रकार परमेश्वर के वचन को अपने विचारों में जड़ जमाने से रोकना। लेकिन यह एक द्वैतवाद भी है, जो मैंने अभी-अभी समझाया है, उसके अतिरिक्त यह यह भी समझा रहा है कि जबकि शरीर का खतना सभी इब्रानी पुरुषों द्वारा धारण किए जाने वाले अब्राहमिक वाचा का ईश्वर निर्धारित चिह्न है। एक खतना किया हुआ हृदय (एक खतना किया हुआ मन) उस बाहरी शारीरिक क्रिया का आंतरिक आध्यात्मिक साथी होना चाहिए। मूसा द्वारा पहली बार कहे जाने के लगभग 1400 वर्ष बाद पौलुस ने यही बात कही। वास्तव में पौलुस कहता है कि बिना मन के परिवर्तन के शारीरिक खतना जो हमें परमेश्वर के साथ सामंजस्य की ओर ले जाता है, हमेशा के लिए बेकार है। इसके अलावा मसीहा के आगमन के बाद से हृदय का खतना

प्रदर्शित करने या प्राप्त करने के लिए किसी को शारीरिक खतना की आवश्यकता नहीं है। इसलिए ठेठ इब्रानी शैली में, एक साहित्यिक दोहा लिखा गया है क्योंकि अगले शब्द हैं "इसलिए एक हठीले लोग मत बनो। हठीले का मतलब है जिद्दी और अनुत्तरदायी। इसका मतलब है कि मूसा इस्राएल से कह रहा है कि अपने दिल को पवित्र आत्मा द्वारा खतना करने की अनुमति देकर आप अब एक हठी व्यक्ति नहीं रहेंगे। इसलिए परमेश्वर के लोगों, हठी लोगों का राष्ट्र मत बनो क्योंकि तुमने प्रभु द्वारा अपने मन के खतना को अस्वीकार कर दिया है।

मैं चाहता हूँ कि आप इसे सुनें: मसीह में आपका विश्वास जरूरी नहीं कि खतना किए हुए हृदय के बराबर हो। आपके उद्धार (जिसका अर्थ है कि आपको विश्वास है कि यीशु आपके पापों के लिए मरा) का अर्थ यह नहीं है कि आपके मन में वह परिवर्तन है जो केवल ईश्वर के कार्य के माध्यम से, पवित्र आत्मा के माध्यम से आपके मन को उसके प्रति उत्तरदायी बनाकर ही आ सकता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक से इस अंश को सुनें: प्रेरितों 8:14 जब यरूशलेम में दूतों ने सुना कि शोमरोन ने उसे स्वीकार कर लिया है, तो वे नीचे आए और उसके लिए प्रार्थना की। परमेश्वर के वचन के अनुसार, उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा, कि वे पवित्र आत्मा का सुसमाचार प्राप्त करें। उनमें से किसी पर भी यह आज्ञा न हो; वे केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिए हुए थे। 15 16 क्योंकि तब तक वह नहीं आया था, फिर, जब पतरस और योहानान ने उन पर हाथ रखा, तो उन्हें रूआख हाकोदेश प्राप्त हुआ।

मिस्र में फसह के पर्व के तुरंत बाद इस्राएली लोग छुड़ाए गए लोग थे। लेकिन उन्हें परमेश्वर के नियम और आदेश नहीं मिले थे और उनके पास अभी तक खतना किए हुए हृदय नहीं थे जो उनके मन को परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी बनाते। इस प्रकार उन्होंने जंगल में बड़े पाप किए, जिनमें से हजारों लोग मारे गए और परमेश्वर ने एक से अधिक बार उन सभी को नष्ट करने का निर्णय लिया (केवल मूसा द्वारा परमेश्वर के साथ उनकी ओर से मध्यस्थता के द्वारा बचाए गए)। विश्वासियों के रूप में हम वास्तव में उसी क्षण छुड़ाए जाते हैं जब हमारे पास यह सरलतम विश्वास होता है कि यीशु प्रभु हैं। हालाँकि जिस तरह इस्राएलियों को परमेश्वर के कार्य द्वारा खतना किए हुए मन की आवश्यकता थी (ताकि वे उसके प्रति आज्ञाकारी होने में सक्षम हो), वैसे ही हमें भी है।

मूसा अपने तर्क के साथ आगे बढ़ता है कि इस्राएल को आज्ञाकारी क्यों होना चाहिए और यहोवा की बात पर ध्यान देना चाहिए और यह कि परमेश्वर सभी प्राणियों में सबसे महान है। वह उन शब्दों का उपयोग करता है जो उस दिन के लिए अच्छी तरह से समझे जाते थे: प्रभुओं का प्रभु, देवताओं का परमेश्वर। यह भाषा कई देवताओं की स्वीकृति की तरह लगती है (एक देवता, YHWH अन्य देवताओं से अधिक श्रेष्ठ है) भले ही यह वास्तव में एकेश्वरवाद का कथन है। लेकिन दिन की आम समझ के भीतर दिन की आम भाषा ही वह है जिसकी आवश्यकता है और जिसका उपयोग किसी बात को समझाने के लिए किया जाता है और यही यहाँ इसका अर्थ है। लेकिन यहोवा एक बहुत ही अनोखा परमेश्वर है जो रिश्वत नहीं लेता (उस समय के लिए प्रथागत), और उसका न्याय इस बात पर जोर देता है कि इस्राएली विधवाओं और अनाथों की इस्राएली समाज

द्वारा कोमलता से देखभाल की जाए। इससे भी अधिक परमेश्वर उनसे प्यार करता है जो इस्राएल का हिस्सा भी नहीं हैं, और इसलिए अजनबी, निवासी विदेशी जो इस्राएल के बीच रहता है (इब्रानी में **गैर**), को भी भोजन और कपड़े उपलब्ध कराए जाने चाहिए यदि उनके पास गरीबी या परिस्थिति के कारण इसे प्राप्त करने का कोई साधन नहीं है।

क्योंकि परमेश्वर किसी व्यक्ति का सम्मान नहीं करता (वह कुलीन वर्ग से प्रभावित नहीं है) वह सभी के लिए समान न्याय चाहता है। इसलिए प्रभु के सांसारिक प्रतिनिधियों के रूप में, इस्राएल को **गैर** से प्रेम करना चाहिए ताकि उन्हें दिखाया जा सके कि इस्राएल का परमेश्वर **गैर** से प्रेम करता है।

यह सब हमें काफी परिचित लगना चाहिए क्योंकि ये (बेशक) बिल्कुल वही सिद्धांत हैं जो यीशु ने सिखाए थे। और यह भी बताता है कि प्रभु ने गैर-इब्रानी (गैर-यहूदियों) के लिए मुक्ति का रास्ता क्यों बनाया, वह पूरी मानवता से प्यार करता है, न कि केवल एक निश्चित गोत्र या राष्ट्र में पैदा हुए लोगों से। फिर भी यह वास्तव में केवल एक निश्चित लोगों (याकूब द्वारा उत्पन्न लोगों) के साथ किए गए दिव्य वाचाओं के माध्यम से ही है कि विदेशियों को मुक्ति मिल सकती है, उन्हें (हमें) इस्राएल के अलावा एक अलग गैर-यहूदी वाचा या अपना खुद का यूरोपीय मसीहा नहीं मिलता है।

आइये अध्याय 11 पर चलते हैं।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 11 पूरा पढ़ें

अब तक व्यवस्थाविवरण में मूसा का उपदेश विशिष्ट अध्यादेशों के बजाय व्यवस्था के व्यापक और अंतर्निहित (आधारभूत) ईश्वर-सिद्धांतों को कवर कर रहा है। उसने इस्राएल के इतिहास, परमेश्वर द्वारा उन्हें अपने अलग लोगों के रूप में चुने जाने की कृपापूर्ण पसंद, जंगल में उनके साथ क्या हुआ और प्रभु ने उनकी देखभाल कैसे की, और उनके सामने रखे गए प्रस्ताव के बारे में उनका रवैया कैसा होना चाहिए, इन सबकी समीक्षा की है अर्थात्, यहोवा ने इस्राएल के सामने एक ऐसा प्रस्ताव रखा है जिसे इस्राएल निश्चित रूप से अस्वीकार कर सकता है। उसने उनका परमेश्वर बनने की पेशकश की है, और बदले में वे उसके लोग होंगे। उसने इस्राएल के साथ एक विशेष और अद्वितीय संबंध और एकता स्थापित करने की पेशकश की है, लेकिन केवल तभी जब वे ऐसा चाहते हैं। और जिस तरह से उन्हें परमेश्वर को दिखाना चाहिए कि वे वास्तव में ऐसा चाहते हैं, वह है माउंट सिनाई पर किए गए इस नए वाचा को प्रमाणित करना, क) सामूहिक रूप से इसके साथ सहमत होना, और ख) इसकी शर्तों का लगन से पालन करना।

देखिए, कभी-कभी हम मूसा की इस वाचा को इस्राएल द्वारा स्वीकार करने के बारे में एक महत्वपूर्ण बिंदु को भूल जाते हैं, ऐसा नहीं है कि यदि इस्राएल इसे स्वीकार करता है तो उन्हें उस वाचा की आशीषें प्राप्त होंगी, और यदि वे इसे अस्वीकार करते हैं तो उन्हें वाचा में निहित श्राप प्राप्त होंगे। ऐसा है कि यदि वे वाचा को स्वीकार नहीं करना चुनते हैं, यदि वे परमेश्वर के साथ मित्रता के प्रस्ताव को अस्वीकार करना चुनते

हैं, तो ऐसा ही हो, इस्राएल को बस राष्ट्रों के सामान्य समूह में वापस फेंक दिया जाता है जो पृथ्वी के सभी लोगों का निर्माण करता है (वह समूह जिससे उन्हें पहले स्थान पर लिया गया था), और उन्हें बाकी लोगों की तुलना में बेहतर या बदतर या अलग नहीं माना जाएगा। वे व्यवस्था में निहित विशेष आशीषों के लिए पात्र नहीं होंगे, न ही वे ग्रह पृथ्वी ग्रह पर लाखों लोगों में से किसी अन्य की तुलना में व्यवस्था के विशेष श्रापों के अधीन होंगे। सौदा यह है कि यदि वे वाचा को स्वीकार करते हैं, यदि वे यहोवा के साथ एक विशेष वाचा संबंध में प्रवेश करते हैं, तो वे इसके आशीर्वाद और इसके श्रापों के अधीन होंगे। आशीर्वाद, वाचा की शर्तों का पालन करने से (इसके नियमों का पालन करने से) मिलते हैं और श्राप, वाचा की शर्तों का उल्लंघन करने से (इसके नियमों को तोड़ने से) मिलते हैं। हालाँकि ये आशीर्वाद और श्राप केवल उन लोगों पर लागू होते हैं जिनके साथ परमेश्वर ने वाचा बाँधी है। यह दूसरों के लिए नहीं है। उदाहरण के लिए, माउंट सिनाई पर वाचा को स्वीकार करने से मुर्तिपूजक, गैर-यहूदी मेसोपोटामिया व्यवस्था के श्राप के अधीन नहीं आता। मैं आपको यह दो कारणों से बता रहा हूँ 1) क्योंकि यह एक आम गलत धारणा है कि जो लोग वाचा के अधीन नहीं हैं, वे इसलिए व्यवस्था के श्रापों को भुगतते हैं और जो इसके अधीन हैं, वे स्वचालित रूप से व्यवस्था के आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और 2) क्योंकि यह इस कारण को और पुख्ता करने में मदद करता है कि पौलुस ने इतनी दूर तक (विशेष रूप से रोम में चर्च को लिखे अपने पत्र में) यह समझाने के लिए कि गैर-यहूदी लोग जब यीशु में विश्वास करने लगते हैं, तो वे इस्राएल में (अर्थात् परमेश्वर के साथ इस्राएल की वाचाओं में) जुड़ जाते हैं। अगर हम इस्राएल की वाचाओं में शामिल नहीं हुए, तो हमें उनकी शर्तों में हिस्सा लेने का कोई अधिकार नहीं है। लेकिन गैर-यहूदी ईसाईयों को यह याद रखना चाहिए: वाचा में शर्तें होती हैं। और जब आपने और मैंने यीशु को स्वीकार किया, तो हमने वाचा की सभी शर्तों को स्वीकार कर लिया, न कि केवल उन शर्तों को जिन्हें हम पसंद करते हैं।

याद कीजिए पिछले सप्ताह हमने यिर्मयाह 31 में वह महत्वपूर्ण अध्याय पढ़ा था जिसमें बताया गया है कि प्रभु एक नई वाचा बनाने जा रहे हैं (यह वही है जिसे बाद में मसीह के अधीन नई वाचा कहा जाएगा), लेकिन आइए याद रखें कि यह वाचा किसके साथ किसके बीच बनाई जा रही थी:

यिर्मयाह 31:31 यहोवा की यह वाणी है, "देख, ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ नयी वाचा बाँधूँगा।

प्रभु और यहूदा के घराने और इस्राएल के घराने के बीच एक नई वाचा होनी थी, अनिवार्य रूप से ठीक उन्हीं लोगों के बीच जिनके लिए मूसा की वाचा स्थापित की गई थी। इसलिए गैर-यहूदियों के लिए मुद्दा यह है कि उस प्रावधान के अद्भुत प्रावधानों तक कैसे पहुँच प्राप्त करें जिसे ईसाई 'नई वाचा' कहते हैं जो विशेष रूप से इस्राएल और उन सभी के लिए है जो इस्राएल से जुड़ेंगे। और उस मुद्दे का उत्तर यह है कि यहूदी मसीहा, नासरत के यीशुआ में विश्वास हमें इस दायरे में लाता है। यह एकमात्र और एकमात्र प्रवेश

टिकट है जिसकी अनुमति है और जो इस्राएल की वाचाओं द्वारा प्रदान किए गए छुटकारे में शामिल होने के लिए आवश्यक है।

अध्याय 11 की पद 1, इस्राएल के लिए एक बुनियादी नियम के साथ शुरू होती है, जो कि वह रवैया भी है जिसके साथ इस्राएल को परमेश्वर के साथ वाचा के रिश्ते में प्रवेश करना है: उससे प्रेम करो। ध्यान दें कि “उससे प्रेम करो” कहने के तुरंत बाद इसका अर्थ निर्धारित किया जाता है। हमेशा उसके नियमों, नियमों और आज्ञाओं का पालन करो।

अब व्यवस्थाविवरण 11 बनाम अध्याय 10 में जिस मुद्दे पर चर्चा की जा रही है, उसमें एक सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव है। अध्याय 10 में मुद्दा परमेश्वर के साथ वाचा संबंध की स्वीकृति या अस्वीकृति का है। क्या इस्राएल प्रस्तावित वाचा में प्रवेश करना चुनता है या नहीं? अध्याय 11 में मुद्दा यह है कि एक बार जब वाचा स्वीकार कर ली जाती है, तो इस्राएल (दोनों सामूहिक रूप से और व्यक्तिगत रूप से) के लिए अगला निर्णय वाचा की शर्तों का पालन करना या न करना है और दोनों के लिए क्या परिणाम होंगे। मैं चाहता हूँ कि यह अंतर आपके दिमाग में अच्छी तरह से अंकित हो जाए, इसलिए मैं इसे स्पष्ट करता हूँ। यदि आप एक घर खरीदना चाहते हैं और आपको कोई पसंद आता है, तो एक अनुबंध तैयार किया जाता है। आप उस अनुबंध को देखते हैं, देखते हैं कि विक्रेता क्या प्रावधान और शर्तें माँगता है और निर्णय लेते हैं कि आप उस अनुबंध में प्रवेश करना चाहते हैं या नहीं। यदि आप “नहीं” का निर्णय लेते हैं, तो शायद थोड़े समय के अलावा कुछ भी हासिल या खोया नहीं जाता है। आपके पास कोई दायित्व नहीं है और उस बिंदु पर कोई दंड नहीं है क्योंकि कभी भी कोई सहमत सौदा नहीं हुआ था। व्यवस्थाविवरण अध्याय 10 तक इस्राएल के साथ यही स्थिति है। अनुबंध (मोज़ेक वाचा) अपनी सभी शर्तों (आशीर्वाद और श्राप) के साथ इस्राएल को मूसा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा प्रस्तुत किया गया है, और अब यह इस्राएल पर निर्भर है कि वह प्रस्तावित अनुबंध में प्रवेश करे या नहीं। यदि वे “नहीं” का निर्णय लेते हैं तो कुछ भी हासिल नहीं होता है, लेकिन इसमें कोई अंतर्निहित दंड भी नहीं है जिसके बारे में हम जानते हैं।

घर के उदाहरण पर वापस आते हैं: यदि आप उस घर के अनुबंध की शर्तों को स्वीकार करने का फैसला करते हैं और कागज़ात पर हस्ताक्षर करते हैं (इसकी शर्तों को स्वेच्छा से स्वीकार करने का संकेत देते हुए), तो सब कुछ बदल जाता है। यदि आप शर्तों का पालन करते हैं तो आपको उस घर का आनंद और सुरक्षा मिलती है जो आपको सुरक्षा और आश्रय प्रदान करेगा, लेकिन यदि आप अनुबंध की शर्तों का उल्लंघन करते हैं तो आप घर खो देते हैं और अक्सर कठोर दंड भी भुगतना पड़ता है। यही वह है जो इस्राएल अध्याय 11 में कर रहा है; ऐसा माना जाता है कि उन्होंने मूसा की वाचा की शर्तों को स्वीकार कर लिया है, उन्होंने परमेश्वर के साथ अनुबंध कर लिया है, और अब इस बात पर विचार किया जा रहा है कि इस समझौते का पालन करने पर क्या परिणाम होंगे, तथा इसकी शर्तों का उल्लंघन करने पर क्या दंड होगा।

पद 2 – 7 से मूसा समझाता है कि वह इस्राएलियों से किसी दूसरी पीढ़ी के अनुभवों को मात्र विश्वास पर लेने के लिए नहीं कह रहा है, बल्कि उनमें से कई लोगों ने खुद व्यक्तिगत रूप से देखा है कि वह उनके इतिहास के बारे में क्या याद दिला रहा है। निश्चित रूप से कई इब्रानियों ने जो अब लगभग 60 वर्ष के हैं, उन्होंने मिस्र में जो कुछ भी हुआ, उसे भी देखा है क्योंकि जब वे मिस्र से निकले थे, तब उनकी उम्र लगभग 20 वर्ष रही होगी, और ऐसा इसलिए है क्योंकि (सामान्य रूप से) भले ही निर्गमन की पहली पीढ़ी के सभी लोगों को मरना पड़ा था, इससे पहले कि परमेश्वर उन्हें वादा किए गए देश में प्रवेश करने की अनुमति देता, मिस्र के फसह के समय प्रभावित लोग 20 वर्ष और उससे अधिक उम्र के थे, यह वह आयु समूह (20 वर्ष और उससे अधिक) था जिसे व्यक्तिगत जवाबदेही की आयु माना जाता था। तो जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं कि मिस्र में और फिर 40 वर्षों के जंगल में भटकने के दौरान जो कुछ भी हुआ, वह 50 वर्ष की आयु के लोगों के मन में काफी स्पष्ट और वास्तविक था। मूसा के सामने खड़े सभी लोगों ने व्यक्तिगत रूप से वह सब कुछ अनुभव नहीं किया जिसके बारे में मूसा बोल रहा था; इस समय जीवित लोगों में से अधिकांश इस कठिन यात्रा के दौरान पैदा हुए थे। हालाँकि, बहुत से इब्रानियों ने कम से कम कुछ हद तक इसका अनुभव किया था, इसलिए उनके पास मूसा पर संदेह करने या जो उन्होंने व्यक्तिगत रूप से देखा था उसे अस्वीकार करने का कोई कारण नहीं था।

इसलिए, मूसा ने पद 8 में कहा, यदि आप कनान में प्रभु द्वारा आपके लिए रखी गई आशीषों का अनुभव करना चाहते हैं तो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें। मुख्य बात: केवल इब्रानियों के रूप में जन्म लेना ही आपके लिए देश की अच्छी चीज़ों से आशीर्वाद पाने के लिए पर्याप्त नहीं है, बल्कि आपको उस वाचा के प्रति भी आज्ञाकारी होना चाहिए जिसे स्वीकार करने के लिए आपने अभी-अभी सहमति व्यक्त की है। आज्ञाकारिता ही इस्राएल के लिए आगे आने वाली सभी चीज़ों की कुँजी थी।

अगले कई पद सीधे-सादे लगते हैं, लेकिन कुछ रोचक अंतर्दृष्टियाँ हैं जिन्हें आप सराह सकते हैं जो उनके प्रभाव को बढ़ाती हैं। मिस्र और कनान की भूमि की तुलना और विरोधाभास किया गया है, और मूसा कहता है कि कनान, मिस्र जैसा बिल्कुल नहीं है क्योंकि मिस्र में आपको अपने खेतों में पानी लाने के लिए काम करना पड़ता था। लेकिन कनान में परमेश्वर आपके खेतों को आपके लिए पानी देगा।

मिस्र अपेक्षाकृत समतल भूमि थी, लेकिन कनान आम तौर पर पहाड़ी है जिसके परिणामस्वरूप घाटियों हैं। मिस्र पृथ्वी पर किसी भी अन्य भूमि की तरह था, जो उसके निवासियों ने जो बनाया वह बन गया; लेकिन कनान, पद 12 में प्रभु कहते हैं, वह देखभाल करता है और देखभाल करता है।

मैं आपके साथ कुछ साझा करना चाहता हूँ जिसे समझना थोड़ा कठिन हो सकता है, पद 10 में CJB कहता है कि "वहाँ (मिस्र में) तुम अपने बीज बोते थे और सिंचाई प्रणाली को चलाने के लिए तुम्हें अपने पैरों का उपयोग करना पड़ता था..."। यह अपेक्षाकृत मानक अंग्रेजी अनुवाद है जिसे गतिशील अनुवाद कहा जाता है और यह शायद एक अच्छा अनुवाद है क्योंकि यहाँ जो वर्णन किया जा रहा है वह वास्तव में मानव निर्मित

सिंचाई प्रणाली है जो मिस्र की कृषि के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, नील नदी (अनिवार्य रूप से मिस्र का एकमात्र पर्याप्त जल स्रोत) के पानी का उपयोग करके खेतों को सींचने के लिए नहरों, जलाशयों और चैनलों की एक प्रणाली बनाई गई थी।

सिंचाई प्रणाली को चलाने के लिए कई अलग-अलग तरह के कामों में इंसानी पैरों का इस्तेमाल किया जाता था। कुछ मामलों में वे एक तरह के पानी के पहिये का इस्तेमाल करते थे, जो आम तौर पर इंसानी शक्ति से चलता था। उन्होंने एक शादुफ का भी इस्तेमाल किया जो कि मूल रूप से रस्सी पर बंधी एक बाल्टी थी जिसका एक सिरा लीवर से बंधा हुआ था। एक व्यक्ति बाल्टी को पानी के जलाशय में डुबा देता था और फिर लीवरेज का उपयोग करके भरी हुई बाल्टी को ऊपर उठाकर सिंचाई चैनल में डाल देता था। इसमें बहुत काम शामिल था क्योंकि यह अनुमान लगाया गया है कि मिस्र में लगभग 100 दिवसीय बढ़ते मौसम के दौरान उचित फसल सुनिश्चित करने के लिए प्रति एकड़ 1000 टन पानी की आवश्यकता होती थी।

मिस्र ने जो प्रणाली तैयार की थी वह अद्भुत थी। उन्होंने पानी को उन चैनलों में लाने और खेतों तक पहुँचाने के लिए हजारों शादुफ, सैकड़ों वाटरव्हील और कई अन्य चतुर तरीकों का इस्तेमाल किया। अब इस प्रक्रिया को बाढ़ के मौसम में नील नदी के प्राकृतिक अतिप्रवाह के साथ भ्रमित न करें, जो भूमि को इतना पानी नहीं देता था, बल्कि यह खेतों को रोपण से पहले खाद देने के लिए गाद में निहित आवश्यक समृद्ध पोषक तत्व प्रदान करता था।

यह भी समझें कि मिस्र का अधिकांश भाग रेगिस्तान था, व्यावहारिक रूप से वहाँ बिल्कुल भी वर्षा नहीं होती थी। नील नदी का पानी अफ्रीका के दूसरे क्षेत्र की गहराई से, ऊपर की ओर, पहाड़ों की पिघलती बर्फ से आता था। मिस्र को बस नदी के प्रवाह से लाभ हुआ। इसलिए, इन सब बातों को पृष्ठभूमि के रूप में देखते हुए यह कल्पना करना आसान है कि मिस्र को इस विस्तृत सिंचाई अवसंरचना को विकसित करने पर कितना गर्व महसूस हुआ होगा और वे फसल उगाने के लिए केवल अपने प्रयासों पर निर्भर कैसे महसूस करते थे।

कनान में यह स्थिति उलट जाएगी। प्रभु कहते हैं कि कनान में उन्हें मानव संचालित सिंचाई प्रणालियों की आवश्यकता नहीं होगी। इसके बजाय वह उनकी फसलों पर आकाश से वर्षा लाएगा और इसके लिए उन्हें बस प्रतीक्षा करनी होगी और आज्ञाकारी होना होगा और अपने दिल (अपने दिमाग) को दृढ़ता से उस पर केंद्रित रखना होगा। लोगों के लिए अनाज बेलों से अंगूर, पेड़ों से फल और पक्षियों के लिए घास प्रदान करने के लिए बारिश पर्याप्त होगी और उन्हें इसे पाने के लिए काम नहीं करना पड़ेगा। तथापि, मूसा ने चेतावनी दी कि, बारिश और अच्छी फसलों की प्रशंसा करके तथा यह कि यह सब कितनी आसानी से होता है, किसी कनानी देवता की स्तुति करके अपनी मानवीय प्रवृत्तियों का शिकार मत बनो, और बेशक, यही वह बात है जो इस्राएलियों ने अंततः की लेकिन उनके आभार को गलत दिशा में ले जाने का प्रलोभन बहुत बड़ा होता क्योंकि वे ऐसे लोगों के बीच रहने जा रहे थे जिन्होंने बहुत पहले ही भूमि को साफ कर दिया था और उसमें खाद डाली थी और जानवरों को रखने और उन्हें फसलों से दूर रखने के लिए पत्थर की बाड़ बनाई थी। इन लोगों

के देवताओं को बलि न चढ़ाना एक कठिन काम था, भले ही शांति बनाए रखने के लिए सहनशील होने की कोशिश की जा रही हो। और परमेश्वर कहता है कि यदि तुम इस बुराई के आगे झुक गए तो वह बारिश बंद कर देगा और जमीन कठोर हो जाएगी और इस्राएल को कष्ट होगा और शायद वह बच न पाए।

इसलिए, पद 18–21 में मूसा सलाह देता है कि यहोवा के प्रति वफादार बने रहने के लिए परमेश्वर द्वारा नियुक्त कई दृश्य अनुस्मारकों का उपयोग करें। और इन अनुस्मारकों में टेफ़िलिन, मेजूजा, पुरोहिती और तम्बू की उपस्थिति, और बच्चों को परमेश्वर के नियमों की निरंतर शिक्षा शामिल हैं। और अगर इस्राएल ऐसा करेगा तो वे हमेशा के लिए भूमि पर कब्ज़ा कर लेंगे।

इस्राएल द्वारा भूमि पर अधिकार करने का पहला कदम, कनान को उसके वर्तमान निवासियों से खाली करना है, और प्रभु कहते हैं कि यदि इस्राएल आज्ञाकारिता के रूप में परमेश्वर के प्रति प्रेम प्रदर्शित करेगा तो प्रभु स्वयं उन कनानियों को निकाल देंगे और इस्राएल को सफल होने में सक्षम बनाएँगे। इसलिए कनान पर विजय का वादा पूरी तरह से इस्राएल द्वारा मूसा की वाचा की शर्तों का पालन करने पर निर्भर है (उन शर्तों को हम आम तौर पर व्यवस्था कहते हैं)।

इस्राएल को मिलने वाली भूमि की सीमा अब पद 24 में बताई गई है और केवल राजा दाऊद के समय में ही इस्राएल के पास इस विस्तृत क्षेत्र के करीब कुछ भी था। संक्षेप में, यह इस्राएल के अधिकार के लिए अलग रखी गई भूमि के लिए स्वर्गीय आदर्श है, लेकिन चूँकि यह सौदा सशर्त था और इब्रानियों ने यर्डन नदी को पार करने के तुरंत बाद वाचा की शर्तों को तोड़ना शुरू कर दिया, इसलिए दंड (श्राप) यह था कि परमेश्वर ने कनान पर कब्ज़ा करने वाले सभी लोगों को बाहर नहीं निकाला और इसलिए इस्राएल को वह सब कभी नहीं मिला जो उनके लिए अलग रखा गया था।

इसलिए अध्याय 12 में प्रवेश करने से पहले (जो अलग-अलग व्यवस्थाओं और नियमों और उनके अर्थों को गिनाना शुरू करता है) पद 26 से लेकर इस वर्तमान अध्याय के अंत तक इस्राएल के लिए निर्णय के क्षण की बात करता है। अब वाचा को स्वीकार करने का निर्णय पहले से तय है: यहाँ श्राप और आशीर्वाद से तात्पर्य यह है कि जिस वाचा को उन्होंने स्वीकार किया है, उसमें दोनों शामिल हैं और इसलिए इस्राएल को यह तय करना होगा कि वे जिस पर सहमत हुए हैं, उसका पालन करें या परमेश्वर की कठोरता का अनुभव करें। और पहली बात जो परमेश्वर इस्राएल को करने से मना करता है, वह है कनानियों के देवताओं के सामने झुकना।

हालाँकि पद 29–30 में एक अलग एजेंडे पर चर्चा की गई है। यह है कि एक बार जब वे देश में प्रवेश करते हैं (यहोशू के नेतृत्व में) तो उन्हें एक समारोह करना है जो मूसा की वाचा की पुष्टि करता है जिसके लिए उन्होंने मिस्र छोड़ने के लगभग एक साल बाद सहमति व्यक्त की थी। अब व्यवस्थाविवरण अध्याय 27 में इस विषय को और अधिक विस्तार से लिया गया है और वास्तव में यहोशू की पुस्तक 8:35 में हम पाते हैं कि पुष्टि का समारोह वास्तव में होता है।

यह नवीनीकरण (या पुनः पुष्टि) क्यों आवश्यक था? यह दिलचस्प है कि यह तीसरी बार होगा जब मूसा की वाचा की पुष्टि की गई है। पहली बार माउंट सिनाई पर हुआ था, दूसरी बार मोआब की भूमि में व्यवस्थाविवरण के पिछले कुछ अध्यायों में हमने जो बताया है, और तीसरी बार इस्राएल के वादा किए गए देश में प्रवेश करने के बाद होगा। पुनः पुष्टि की इस श्रृंखला के बारे में कम से कम एक सिद्धांत यह है कि यह उस युग की अधिकांश वाचाओं और संधियों का रिवाज था। जब कोई नेता जिसके साथ संधि की गई थी, मर जाता था, तो नए नेता को वाचा को फिर से मान्य करना पड़ता था और यह एक समारोह के साथ पूरा होता था। वाचा की पुष्टि करने के लिए दूसरे समझौते के बाद मूसा की मृत्यु हो गई और इसलिए इस्राएल के नए नेता के रूप में यहोशू के साथ तीसरी पुष्टि की आवश्यकता थी (कम से कम उस युग के इन मध्य पूर्वी लोगों की नज़र में)।

लेकिन (फिर से, लोगों की नज़र में) इसका सम्बंध संभवतः एक क्षेत्र के आध्यात्मिक अधिकार को पीछे छोड़कर दूसरे के आध्यात्मिक प्रभाव क्षेत्र में प्रवेश करने से भी था अर्थात्, जैसे इस्राएल ने माउंट सिनाई (यहोवा का निवास स्थान) को छोड़ा और मोआब में प्रवेश किया (जहाँ एक और देवता शासन करने के लिए सोचा गया)। उस भूमि पर आध्यात्मिक अधिकार के साथ संधि की पुष्टि करना प्रथागत रहा होगा। याद करें जैसा कि हमने कई अवसरों पर चर्चा की है कि प्राचीन लोग सोचते थे कि विभिन्न देवता, भूमि के विभिन्न हिस्सों को नियंत्रित करते थे। इसलिए चूँकि यह सभी संधियों की एक बुनियादी आवश्यकता थी कि एक प्रतिज्ञा की जाए, और परिभाषा के अनुसार एक प्रतिज्ञा का अर्थ एक देवता के नाम का आह्वान करना था, और जिस देवता का आह्वान किया गया था उसका नाम उस व्यक्ति का होना चाहिए जो उस क्षेत्र का प्रभारी था जहाँ संधि की गई थी। यदि कोई मिश्र में था तो मिश्र के देवता का आह्वान किया जाएगा, लेकिन यदि कोई मोआब में था तो एक अलग देवता का आह्वान करना आवश्यक था। मोआब की भूमि में मूसा की वाचा की पुष्टि करके यहोवा के अधिकार का नाम उस क्षेत्र से जोड़ा जा रहा था। कनान में एक बार फिर वाचा की पुष्टि करके, यहोवा के अधिकार को उस क्षेत्र तक बढ़ाया जा रहा था।

यह भी दिलचस्प है कि जिस स्थान पर यह वाचा पुनः पुष्टि समारोह अंततः होना था, उसे परिभाषित किया गया था; माउंट गेरिज़िम और माउंट एबाल। शेकेम की सड़क उनके बीच से होकर गुजरती है, जिसमें सड़क के दक्षिण में गेरिज़िम और उत्तर में एबाल है। अब दिलचस्प बात यह है कि यह माउंट गेरिज़िम है जहाँ तोरह के आशीर्वाद की घोषणा की जानी है, लेकिन माउंट एबाल पर तोरह के अभिश्रापों की घोषणा की जानी है। मानो या न मानो, इस विकल्प के पीछे तर्क और पैटर्न है।

पूर्व दिशा के आध्यात्मिक महत्व के हमारे अध्ययन को याद करें। अपने अध्ययन में यह भी याद करें कि कैसे इस्राएल के डेरे को इस तरह से व्यवस्थित किया गया था कि कुछ समूहों को 4 प्रमुख कम्पास दिशाओं के अनुसार स्थायी शिविर स्थान सौंपे गए थे। पूर्व हमेशा प्रमुख है। तो जब कोई पूर्व की ओर मुख करता है, तो आपके दाईं ओर कौन सी दिशा है? दक्षिण। जब पूर्व की ओर मुख किया जाता है तो माउंट

गिरिज्जीम दाई ओर, दक्षिण में था। चूँकि दाहिना भाग अधिक शक्तिशाली और अधिक राजसी है, तो माउंट गिरिज्जीम को वाचा की आशीषों को इससे पढ़ने का विशेषाधिकार दिया गया था। जैसे ही कोई पूर्व की ओर मुख करता है, तो बाई ओर उत्तर होता है, और उत्तर में माउंट एबाल था। बाई ओर जरूरी नहीं कि एक शापित दिशा हो, यह सिर्फ दाई ओर जितनी अच्छी या शक्तिशाली नहीं है।

वैसे: ये दो पहाड़, वही स्थान जहाँ मूसा की वाचा की पुष्टि हुई थी, अब उस क्षेत्र में स्थित है जिसे दुनिया "विवादित क्षेत्र" कहती है: तथाकथित पश्चिमी तट।

अगले सप्ताह हम व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 शुरू करेंगे।